अध्याय पचीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"श्रीसिद्धारूढ़जी का ध्यान करने से मन निर्मल तथा चित्त शुद्ध होता है। ऐसे शुद्ध चित्त के कारण हृद्यांबर में शुद्ध आत्मा प्रतीत होती है। आत्मा में जगत गल जाता है और आत्मा ब्रह्म (परमात्मा) को प्रणाम करके उसी से एकरूप होकर रहती है।"

हे सिद्धनाथजी, आप के चरणों में सिर रखकर मैं आप को प्रणाम करता हूँ, हे दयालु सतगुरुजी, मुझे ग्रंथ लिखने की बुद्धि दीजिए। आप की सेवा में अति आनंद प्राप्त होने के कारण, उस सेवा के आडे आने वाले अन्य कर्म करने में रुचि नहीं होती। जो सतगुरुजी के शरण में जाते हैं उनके सभी विपत्तियों का विनाश होता है, इस मृत्युलोक में तो वे सुखी होते ही हैं परंतु शरीर त्यागने के पश्चात उन्हें सद्गति प्राप्त होती है। एक बार सतगुरुजी के चरणों में शरण लेने के पश्चात वे हमेशा के लिए गुरुभक्त हो जाते हैं और सतगुरुजी के बिना मोक्षप्राप्ति का अन्य कोई भी मार्ग नहीं है, यह निश्चित रूप से जानते हैं। जो सतगुरुजी से विमुख होता है, उस का जीवन भी सतगुरुजी व्यर्थ जाने न देते हुए उसे फिर अपने चरणों तक पहुँचाते हैं। पिछले अध्याय में बयान किया था की भक्त बसवण्णा सतगुरुजी की कृपा से धनवान होने के बावजूद भी प्रतिदिन उनका भजन करता था। समय के साथ उसके व्यापार का फैलाव बढ़ गया, जिस के कारण उसे सतगुरुजी के दर्शन के लिए समय निकालना कठिन हो गया और धीरे धीरे व्यापार में व्यस्त होने के कारण गुरुचिंतन करना भूलने लगा। अन्य लोगों ने उसे बहुत समझाया परंतु पूर्वकाल में भोगे हुए दुखों को वह पूर्ण रूप से भूल गया था। उस के पास बहुत खेती-बाडी, धन संपत्ति इकट्ठा हो गई, उस के पश्चात जो घटना हुई उसे सुनिए।

एक बार बसवण्णा बग्गी में बैठकर स्वयं बग्गी हाँक रहा था, बग्गी बहुत तेजी से जा रही थी; उस समय बग्गी के मार्ग में एक वृद्ध महिला खड़ी थी। उसका मन व्यापार के क्रियाकलाप में पूर्ण रूप से व्यस्त होने के कारण उसे ठीक तरह से सामने न देखते हुए वृद्ध महिला के ऊपर ही बग्गी चला दी। अति

वेग से दौड़ने वाली बग्गी के धक्के से वृद्ध महिला धडाम से गिर पड़ी और बग्गी के पहियों तले फँस गयी| हादसे को देखते ही आसपास के लोग दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे और उन्होंने बग्गी ठीक तरह से खड़ी की। वृद्ध महिला का शरीर बग्गी के पहियोंके नीचे आने के कारण पूर्णत: कुचला गया था; एक क्षण में वह मृत्यु को प्राप्त हो गयी। इतने में सिपाही दौड़ते हुए वहाँ आ पहुँचे और बसवण्णा के हाथपाँव जकड़कर वे उसे पुलिसथाने ले गये। बसवण्णा अति भयभीत हुआ था। उसके पश्चात उसपर मुकदमा चला और मुकदमे के फैसले के अनुसार उसे एक वर्ष कैद की सजा हो गयी। घर में पत्नी तथा बच्चे अति दुख में थे फिर भी उन का मन धन में ही व्यस्त था; उस समय भी उनके मन में सतगुरुजी का चिंतन करने के विचार नहीं आया। कुछ दिनों के पश्चात एक बार जब घर के सभी सदस्य गाढ़ निद्रा में थे, चोर दीवार तोड़कर सभी पैसे, धन संपत्ति चुराकर भाग गये। सभी कपड़े तथा गहने जेवर चुराने के पश्चात, घर को आग लगाकर चोर भाग निकले। घर के सदस्यों ने घर के बाहर आकर बहुत आक्रोश किया। सभी पड़ोसी वहाँ दौड़ते हुए चले आए, परंतु वे फैलती हुई आग को नियंत्रित न कर पाने के कारण घर जलकर पूर्ण रूप से राख हो गया। गुरव्वा बच्चों के साथ लगातार रोती चली जा रही थी। आखिर वे सभी पड़ोसी के घर रहने चले गए। सभी खतियौनियाँ तथा हिसाब के कागजात जल गए थे। घर में कुछ भी नहीं बचा हुआ देखकर गुरव्वा पर मानो दुख का पहाड़ टूट पड़ा।

अत्यंत दुखदायी हालात से गुजरते समय गुरव्वा को बीते हुए दिनों का स्मरण हुआ। सिद्धारूढ़जी ने उसे आत्महत्या करने से बचाकर उसकी रक्षा करने की घटना का उसे स्मरण हुआ। सतगुरुजी के प्रसन्न होने से तथा उनकी कृपा से गरीबी से छुटकारा पाकर सारा वैभव प्राप्त होने की सारी स्मृतियाँ उसके मन में जाग उठी। गुरव्वा ने कहा, "हे सतगुरुनाथजी, संपत्ति से मदोद्धत होकर हम आप के सारे उपकार भूल गये, इसलिए आज हम इन संकटों में फँसे हुए हैं। धन प्राप्ति से हमें आप का पूर्ण रूप से विस्मरण हो गया, जिससे हृदय में स्थित सतगुरुजी क्रोधित हो गये। परिणाम रूप से ऐसी शामत हम पर आयी है, अब हम क्या करें? इस से पूर्व जिन्होंने हमारी रक्षा की थी, उन्हीं की शरण में जाना होगा, क्योंकि उनके बिना हमारी रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है। हम

उन्हीं की शरण में जाएँगे। परंतु लोग हम पर हँसेंगे और कहेंगे की धन संपत्ति नष्ट होने के पश्चात लाज शरम छोड़कर फिर से धन प्राप्ति के लिए सतगुरुजी की शरण में आए! इसलिए अब सतगुरुजी से धन नहीं माँगना चाहिए, जिससे सतगुरुजी का विस्मरण होकर विपत्ति का सामना करना पड़ता है। धन से मिलने वाले सुख का हमने अनुभव किया है परंतु सतगुरुजी के चरणों का विस्मरण होने से दुखी हो गए और गुरुचरणों से भी दूर हो गये। इस प्रकार दो प्रकार से हम लुट गये। कुछ भी हो, सारा अभिमान छोड़कर अब सतगुरुजी की शरण में जाकर उनकी अनन्य भक्ति करके इस जन्म को सार्थक बनाना चाहिए।" इस प्रकार सोचकर बच्चों के साथ गुरव्वा सिद्धारूढ़जी के पास आई और उसने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। हाथ जोड़कर उसने कहा, "हे दीनानाथ, आप ने हम पर बहुए उपकार किये, परंतु उन्मत्त होकर हम सबकुछ भूल गये। धन के ग़रूर से आप को भूल गये थे, परंतु आप ने दयालु होकर हमारे मन में स्थित अहंकार के बीज को जला दिया| इसीलिए, आज हम फिर से आप की शरण में आये हैं। सतगुरुनाथजी, फिर एकबार हमारी स्थिति में सुधार हो यह आप से प्रार्थना है। धन हमें उन्मत्त बना देता है, जिससे हम हमारे अंत:करण में स्थित धन (आत्मा) को गँवा देते हैं। इस से पूर्व हमारी कठिनाईयाँ देखकर आप हम पर प्रसन्न हुए थे, परंतु धन प्राप्ति से हम ही आप को भूल बैठे थे। इसलिए, अब हमें धन नहीं चाहिए। अब हमें पहले जैसी आप के चरणों की अनन्य भक्ति दे दीजिए, यही मेरी आप से प्रार्थना है। इस के सिवाय, अन्य किसी भी वस्तु में सुख नहीं है, अन्य सभी वस्तुओं में केवल दुख ही है। अज्ञान में हम ने व्यर्थ ही परिश्रम किये, इसीलिए अब आप ही हमारी रक्षा कीजिए। हे दयालु सिद्धनाथजी, हमारे अपराधों के लिए क्षमा कीजिए और हमेशा आप का चिंतन करने का हमें आशिर्वाद दीजिए।" ऐसी प्रार्थना करते समय गुरव्वा के नयनों से अविरत झरझर आँसू बह रहे थे। झट से आगे बढ़कर उसने गुरुचरणों पर सिर रख दिया। उसी क्षण, उसे पश्चात्ताप हुआ देखकर सतगुरुजी मन ही मन द्रवीभूत हो गए और उन्होंने कहा, "तुम दिनरात सतगुरु चिंतन में तल्लीन रहो, बिलकुल भयभीत न हो। जल्द ही तुम्हारा पति कैदखाने से छूट जाएगा।" सतगुरुजी की अमृत जैसी वाणी सुनकर गुरव्वा मन ही मन में कृतकृत्य हो

गयी और उसने फिर एकबार उन्हें प्रणाम किया। "हे गुरुमाता, आप ने हम पर दया दिखाई।" कहकर वह घर लौट गयी। इधर बसवण्णा जेलखाने में पश्चात्ताप से तड़पता हुआ कह रहा था, "हे सतगुरुनाथजी, जल्दी पधारिए, मेरे सारे अपराधों के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मैं धनप्राप्ति से उन्मत्त हो गया था, परंतु अब पश्चातापी हो गया हूँ। मरते दम तक मुझे आप का विस्मरण नहीं होगा। मुझे हमेशा दुख दीजिए, तभी मुझे आपके चरणों का विस्मरण नहीं होगा। आप के चरणों की भक्ति प्रदान कीजिए, यही मेरी आप से प्रार्थना है।" इतने में कैदखाने का व्दार खोलकर वरिष्ठ अधिकारी अंदर आया और उसने कहा, "उच्च अधिकारी ने तुम्हे रिहा करने की आज्ञा दी है, इसलिए अब तुम अपने घर जाओ।" ऐसा कहकर उसने बसवण्णा को कैदखाने से रिहा कर दिया। घर लौटते ही, धनसंपत्ति के साथ सारा घर जलकर राख हो गया हुआ उसने देखा। उसे देखकर उसने कहा, "सतगुरुजी आप ने मेरी प्रार्थना सुन ली और मुझ पर कृपा की। इन सभी वस्तुओं के साथ विषयोपभोग का मोह भी आप ने जला दिया। अब हमें पूर्वस्थिति प्राप्त हो गयी है। परंतु आप के चरणों पर हमारी श्रद्धा स्थिर रही, यही सब से बड़ा लाभ हमें हुआ है। हे गुरुदेव, इस के पश्चात फिर कभी भी हमें किसी भी वस्तु के प्रति मोह न हो, क्योंकि मोह से हम बच नहीं पाते। आपके चरणों पर हमारी भक्ति स्थिर रखिए।"

इस प्रकार वह मन ही मन जब कह रहा था, तब उसने सामने पत्नी को आते देखा। पति को देखते ही गुरव्वा प्रेमभाव से दौड़ती हुई चली आई और उसने पति के पैर छू लिए। उस पर गुरव्वा ने कहा, "अजी! सतगुरुजी ने मुझ पर कृपा की और आप को कैदखाने से रिहा करवाया।" बसवण्णा ने सिद्धाश्रम में जाकर सतगुरुजी को सारे वृत्तान्त का विवरण दिया। तब सिद्धनाथ ने कहा, "जितना धन आप के पास बचा है, उसे लेकर आप लोग सुख से रहो।" अल्प धन बचा था, साथ ही अन्य लोगों से कुछ पावना था, इन दोनों के लेकर उन्होंने श्रीगुरुमहाराजजी को अर्पण किया; श्रीमहाराज ने वह धन उन्हें लौटाकर कहा, "इसे मेरा आशिर्वाद समझकर ले जाओ। इस के पश्चात आप लोगों को कभी भी मोह की बाधा नहीं होगी।" उस धन को लेकर बसवण्णा गरीबी में ही रहा परंतु सतगुरुजी का अविरत नामस्मरण करते हुए जीवन बिताने लगा। उस

दंपति के मन में वैराग्य की भावना दृढ़ हो गई और वे दोनो उदारता से घर गृहस्थी चलाने लगे। उसके पश्चात सतगुरुजी ने कृपा करके उन्हें ज्ञानबोध किया और उनका भवभय नष्ट कर दिया।

जीवात्मा का संबंध जब विषयोपभोग की वस्तुओं से आता है, तब उसे मोह तथा ममता जकड़ लेते हैं, परंतु सतगुरुजी को जीवात्मा का इस स्थिति में रहना अच्छा न लगने के कारण वे तत्काल उपाय करते हैं। उसके पश्चात वे जीवात्मा के हाथ से ममता रूपी बुढिया को मरवाते हैं और योगसाधना रूपी कैदखाने में उसे बंद करवाते हैं। उसपर शम तथा दम आदि चोर आकर अनेक वासनाओं के रूप में स्थित धनसंपत्ति चुरा ले जाते हैं; संचित कर्म रूपी घर जलकर राख हो जाता है और वे सब भाग जाते हैं। जीवात्मा की चित्तशुद्धि हुई देखकर सतगुरुजी उसे योगाभ्यास से निकालकर ब्रह्मज्ञान का बोध करके उसे भवसागर के पार लगाते हैं। श्रोतागण, अब अगले अध्याय में बयान की हुई सुरस कहानी सुनिए, जिससे भवबंधन टूटकर सतगुरुचरणों से संबंध जुड जाएगा। सिद्धसतगुरुजी पूर्ण रूप से दयालु हैं, छोटा महान इस प्रकार का भेद भक्तों में न करते हुए वे भक्तों के समर्थक बनते हैं और उन पर कृपा करते हैं। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह पचीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥